आज का पुरुषार्थ 1 March 2023

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

सार – *"आने वाले समय में जो भी पेपर आये उसमें full marks लेने के लिए .. अब हमें **एकाग्रता** की शक्ति को बढ़ाना है"*

मनुष्य **सुख शान्ति** यदि चाहता है, यदि वह चाहता है उसे सफलता सदा प्राप्त हो, यदि उसे इच्छा है की वह सर्व सिद्धियों का मालिक बन जाये .. तो उसे अपनी मन और **बुद्धि को एकाग्र करना होगा।**

बहुत भटक चुकी है मनुष्य की मन बुद्धि। बुद्धि तो इसलिए भटक गई है कि उसमें मनुष्य ने unnecessary चीज़ें, गंदगी, व्यर्थ बहुत भर लिया है। और मन तो बहुत निगेटिव हो गया है।

मन तो न जाने क्या क्या सोचता है। मन तो मनोविकारों के वश में करके मनुष्य ने बहुत भटका दिया है। इसलिए वह अशान्ति पैदा कर रहा है। मनुष्य को दुःख दे रहा है। उसे परेशानियों में डाल रहा है।

हमें जो कि **राजयोग** के मार्ग पर चलने वाले है, **एकाग्रचित्त** होकर बाबा से सर्वस्व प्राप्त कर लेना है। जितना हम उसके स्वरुप पर एकाग्र होंगे उतनी ही हमें सुन्दर अनुभूतियाँ होंगी, प्राप्तियाँ होंगी।

जितनी हमारे अंदर **एकाग्रता** होगी, बाबा से उतनी ही हमें वरदान मिल जायेंगे। और सुख शान्ति तो बहुत ज्यादा अनुभव होने लगेगी। इसलिए **बुद्धिमान** मनुष्य को अब चाहिए के वह अपने मन को, अपने बुद्धि को भटकाये नहीं।

बुद्धि को इतना **स्वच्छ** करे कि उसमें भगवान बैठ सके। बुद्धि को इतना पावरफूल करे के उसमें वरदान ठहर सके। बुद्धि को **ईश्वरीय नशें** में रखे के किसी गंदगी को उसमें प्रवेश करने का साहस ही न रहे।

हमें एकाग्रचित्त अवश्य होना है। विना **एकाग्रता** के तो हमारे विकर्म भी विनाश नहीं होंगे। हमें शक्तियाँ तो मिलती ही है एकाग्रता से। और जितना जितना हम स्वयं को एकाग्रचित्त करके जाते है उतना हम स्वयं को जानते भी जाते है।

हमें अपना स्वरुप, अपना **भविष्य देव स्वरुप, अपना पूज्य स्वरुप, अपने 84 जन्मों का स्पष्ट ज्ञान** होता जाता है। तो आईये हम इन महान उपलब्धियों के लिए स्वयं को एकाग्र करे।

जो सूक्ष्मदर्शी है उन्हें देखना चाहिए के →

" मेरा मन कहीं मैं पन और मेरा पन के कारण तो नहीं भटकता है? चिन्ताओं में तो मेरा मन नहीं भटकता है? हमें बेफ़िक्र बादशाह तो बनना ही पड़ेगा! "

तो आईये हम **एकाग्रता के शक्ति** को बढ़ाकर इन संसार की महान सेवा करे। क्योंकि आने वाले दिनों में जब इस संसार में हाहाकार होंगी और बाबा की और उनके बच्चों की जयजयकार होगी तब हमें सारे संसार को बहुत कुछ देना होगा।

और यदि हम एकाग्रचित्त होंगे तो हमें **सर्व खजानों से भरपूर रहेंगे।** विनाशकाल में स्वयं को जानने के कारण हम अचल अडोल भी रहेंगे। और **विनाश** की घटनाओं का प्रभाव भी हम पर नहीं पड़ेगा।

तो हम ध्यान दे, कहीं भटकाये नहीं। यदि हम ऐसी वैसी चीज़ें देखते रहेंगे, मोबाइल पर ऐसी वैसी बातें करते रहेंगे, ज्यादा बातों में रहेंगे .. तो हमारा मन बुद्धि बहुत भटकती रहेगी। और हमें सुख नहीं मिलेगा।

तो आज हम सारा दिन दो चीजों पर स्वयं को एकाग्र करेंगे →

" पहले अपनी आत्मिक स्वरुप पर और अपने सम्पूर्ण फ़रिश्ते स्वरुप पर "

प्रति घन्टा एकबार, अपने इस दोनों स्वरुप को बहुत अच्छी तरह देखेंगे और एकाग्रता के द्वारा हमें यह वैसे ही दिखाई देंगे जैसे .. सामने रखी हुई स्थूल वस्तु दिखाई देती है।

और फिर देखेंगे ऊपर →

" **शान्ति के सागर को ".. और उनसे रोशनियाँ प्राप्त करके चित्त को शान्त करेंगे।**"

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Main: www.shivbabas.org